एक थी बिट्टी एक था बिट्टू

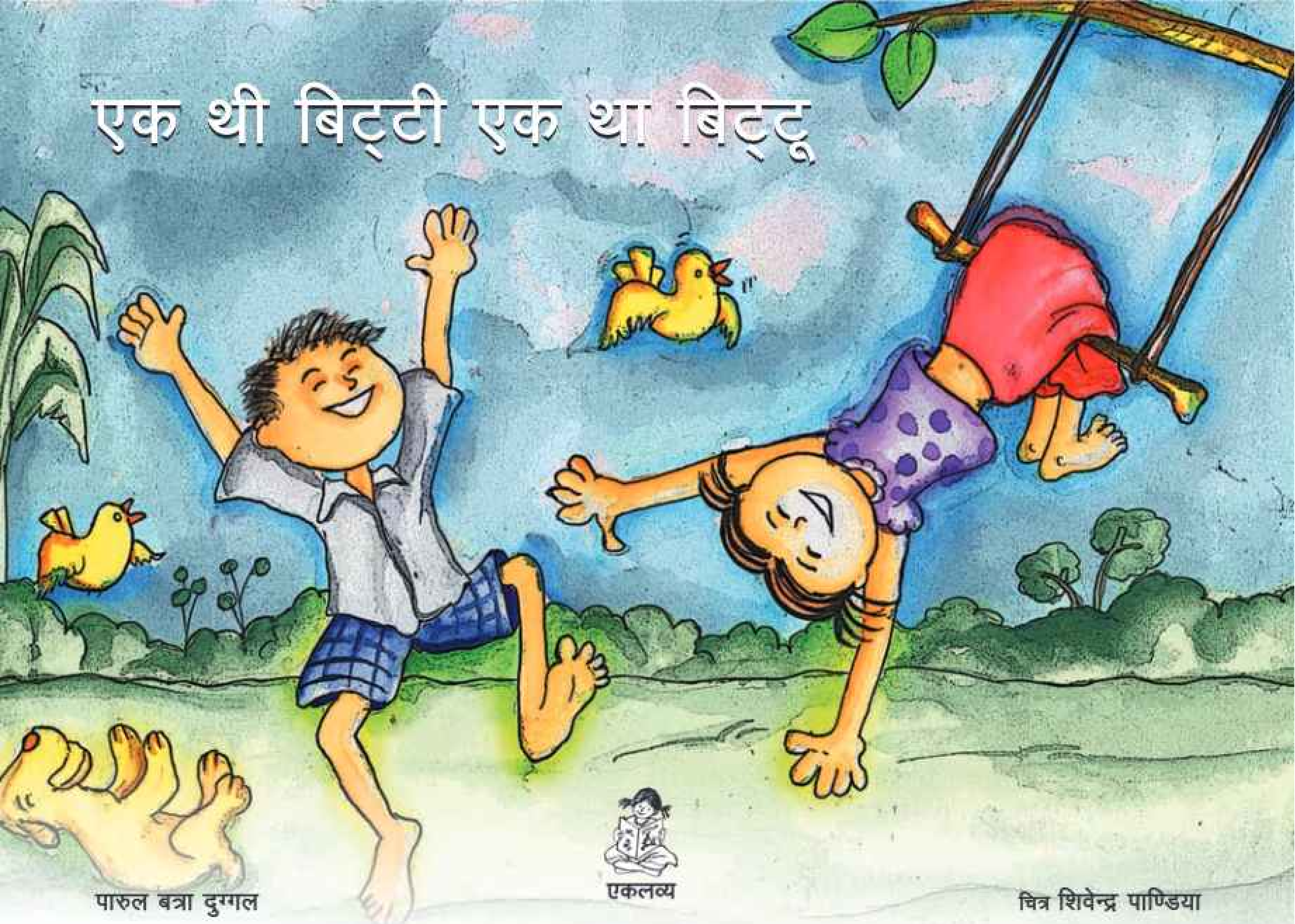

पारुल बत्रा दुग्गल

एकलव्य

चित्र शिवेन्द्र पाण्डिया

छोटे भाई गगन के लिए

एक थी बिट्टी एक था बिट्टू

EK THI BITTI EK THA BITTU

कहानी: पारुल बत्रा दुग्गल
चित्र: शिवेन्द्र पाण्डिया

पारुल बत्रा दुग्गल व एकलव्य
इस कहानी का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों से मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक एवं एकलव्य का ज़िक्र करना और सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए लेखक एवं एकलव्य से सम्पर्क करें।

पहला संस्करण: दिसम्बर 2011 (5000 प्रतियाँ)
पहला पुनर्मुद्रण: मार्च 2015 (3000 प्रतियाँ)
दूसरा पुनर्मुद्रण: मई 2017 (3000 प्रतियाँ)
तीसरा पुनर्मुद्रण: अप्रैल 2018 (3000 प्रतियाँ)
चौथा पुनर्मुद्रण: फरवरी 2019 (3000 प्रतियाँ)
पाँचवाँ पुनर्मुद्रण: नवम्बर 2020 (3000 प्रतियाँ)
छठवाँ पुनर्मुद्रण: जनवरी 2022 (3000 प्रतियाँ)
सातवाँ पुनर्मुद्रण: फरवरी 2023 (3000 प्रतियाँ)
आठवाँ पुनर्मुद्रण: मई 2024 (3000 प्रतियाँ)

पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित

कागज़: 100 gsm मेपलिथो व 300 gsm पेपरबोर्ड (कवर)

ISBN: 978-81-89976-99-6

मूल्य: ₹ 60.00

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72 www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल; फोन: +91 755 268 7589

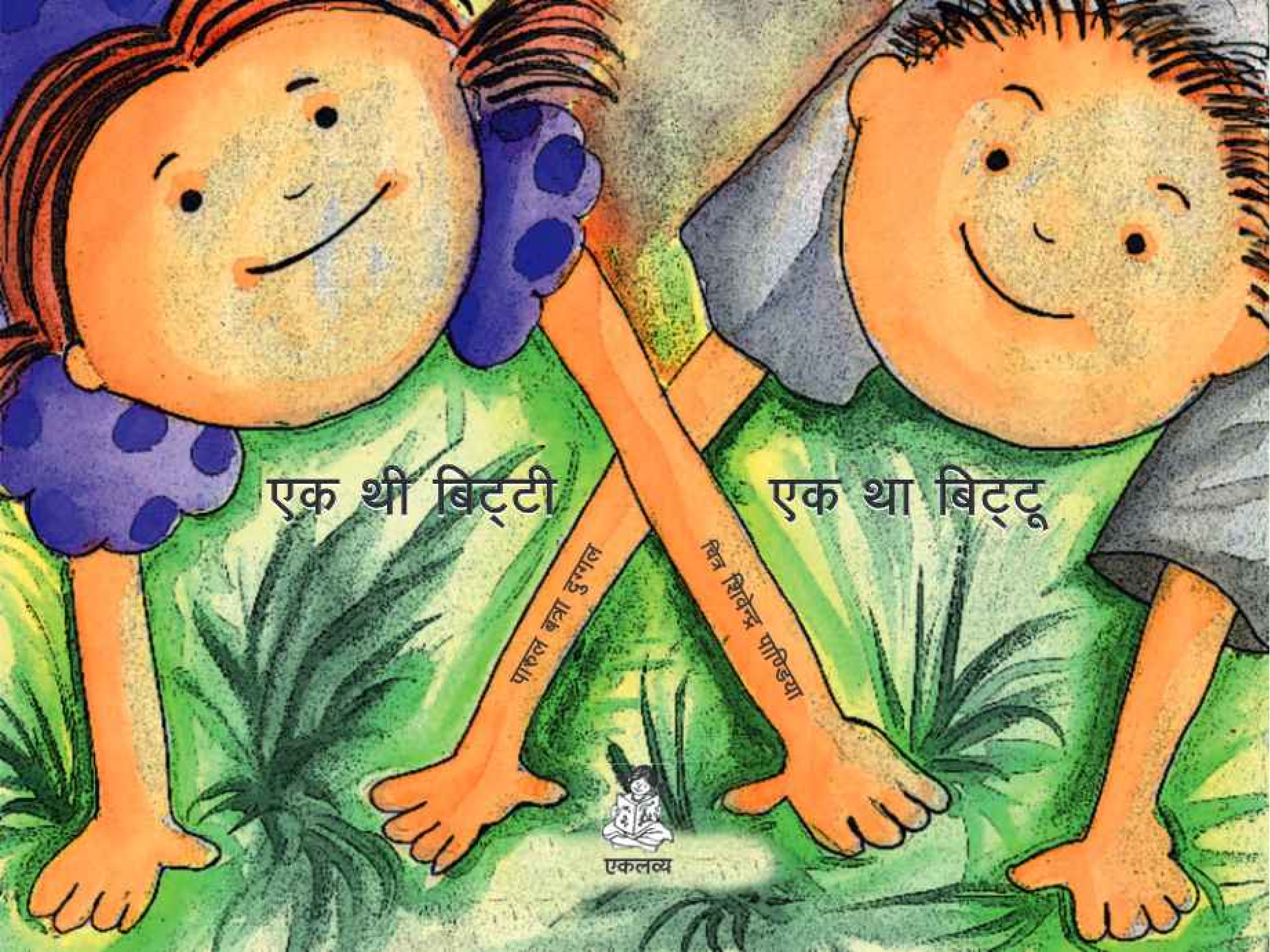

एक थी बिट्‌टी एक था बिट्‌टू

पारुल बत्रा डुग्गल
चित्र शिवेन्द्र पाण्डिया

एकलव्य

यह नटखट बिट्टी है।

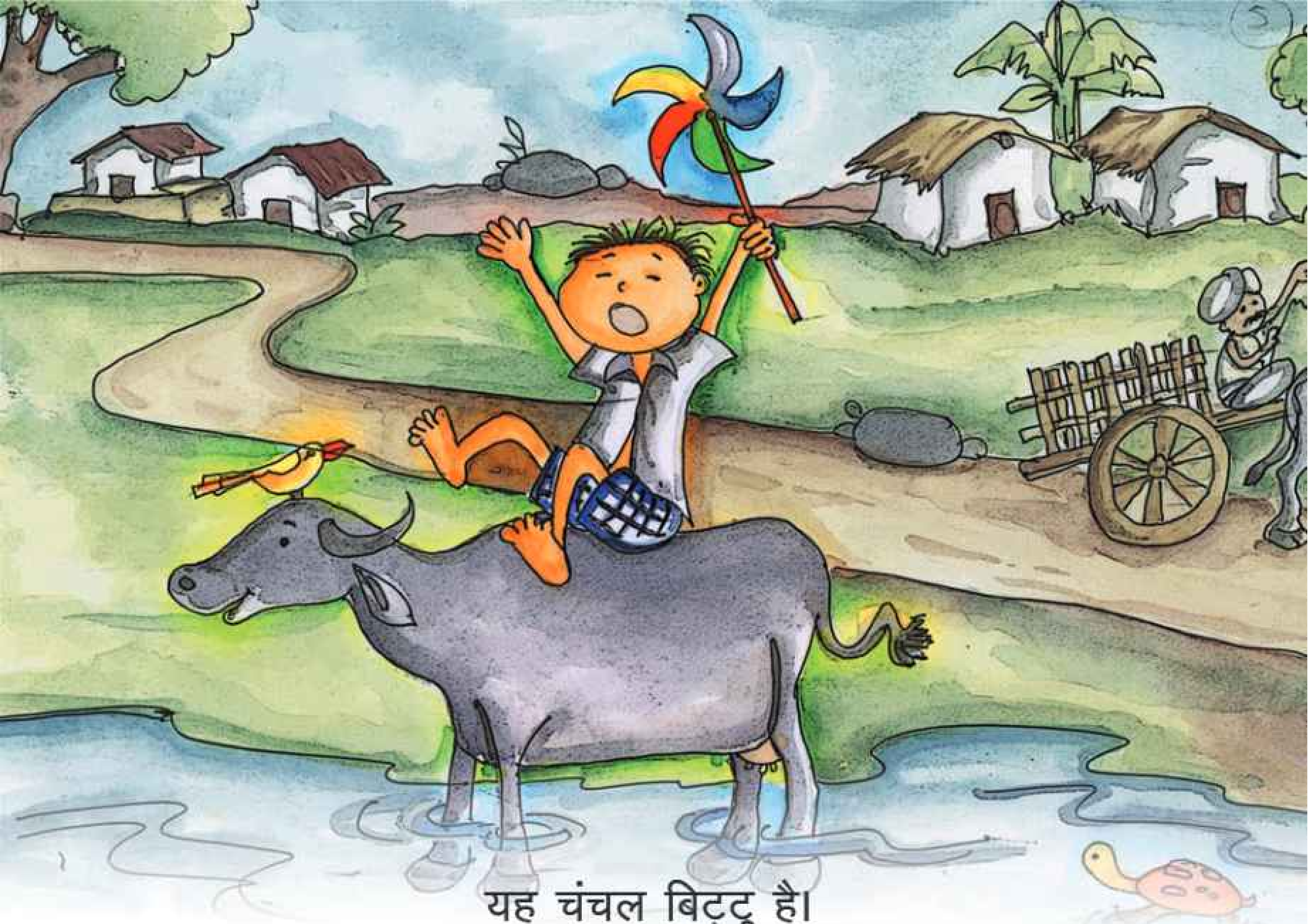

यह चंचल बिट्टू है।

बिट्टी छह बरस की है।

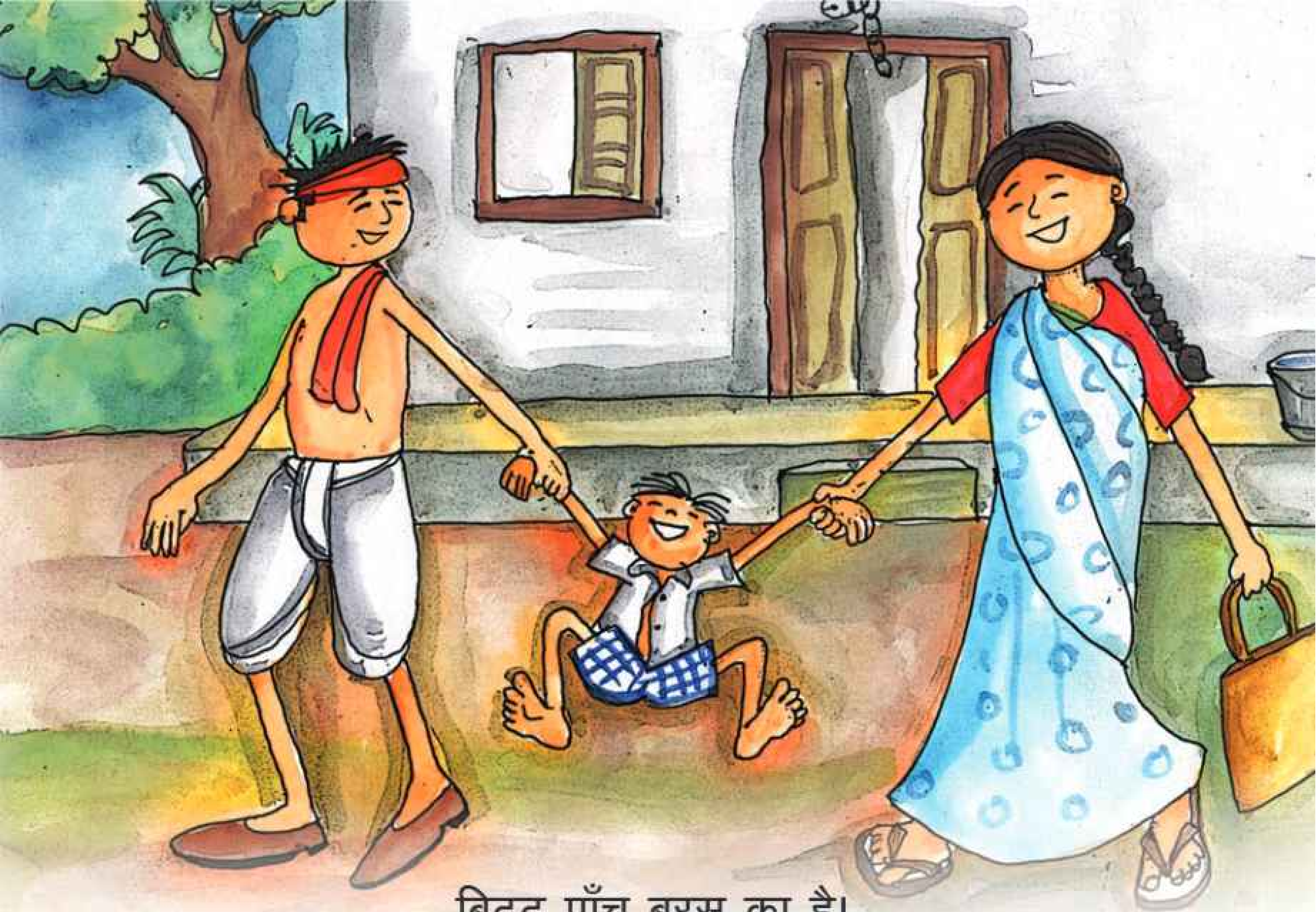

बिट्टू पाँच बरस का है।

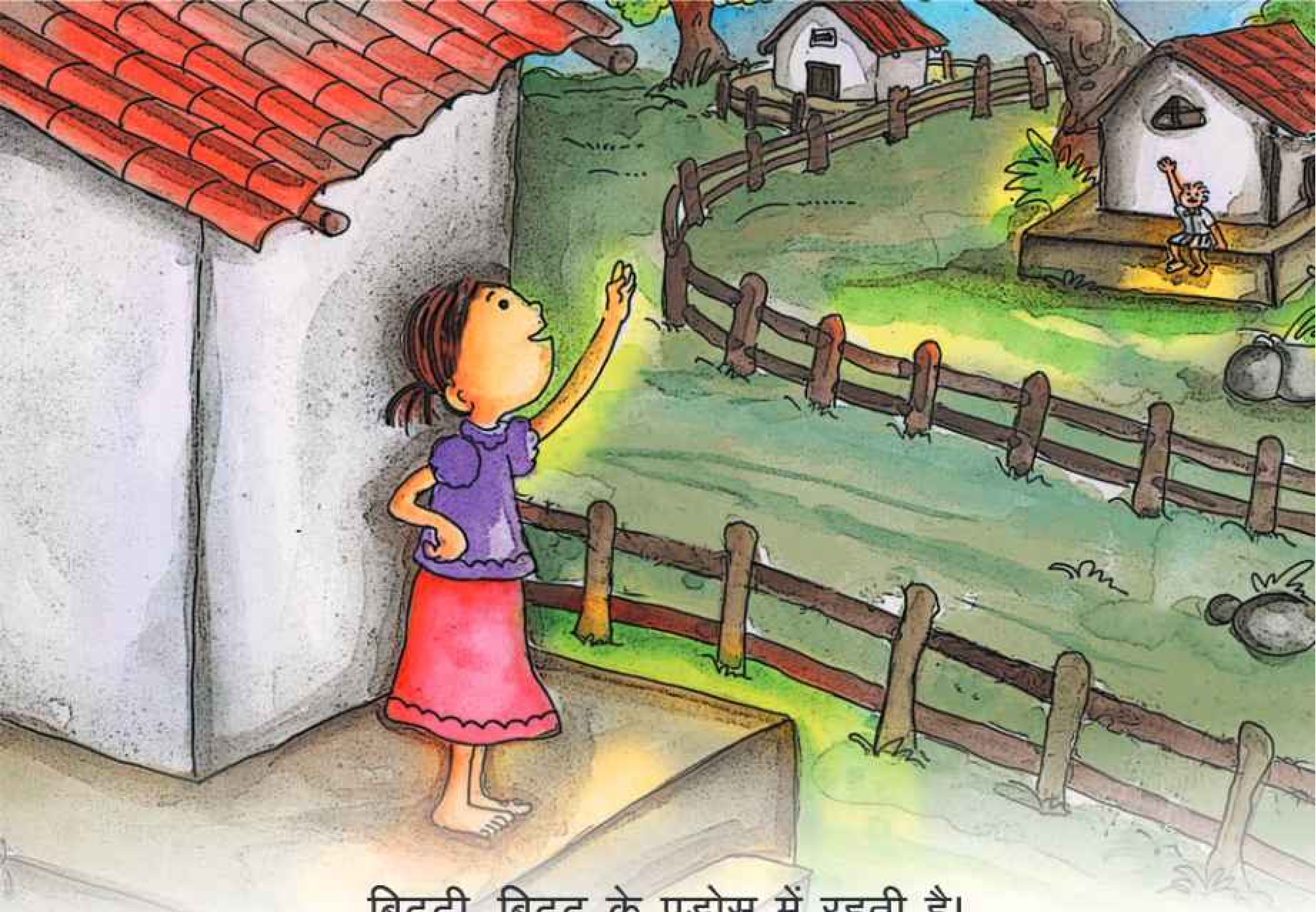

बिट्टी, बिट्टू के पड़ोस में रहती है।

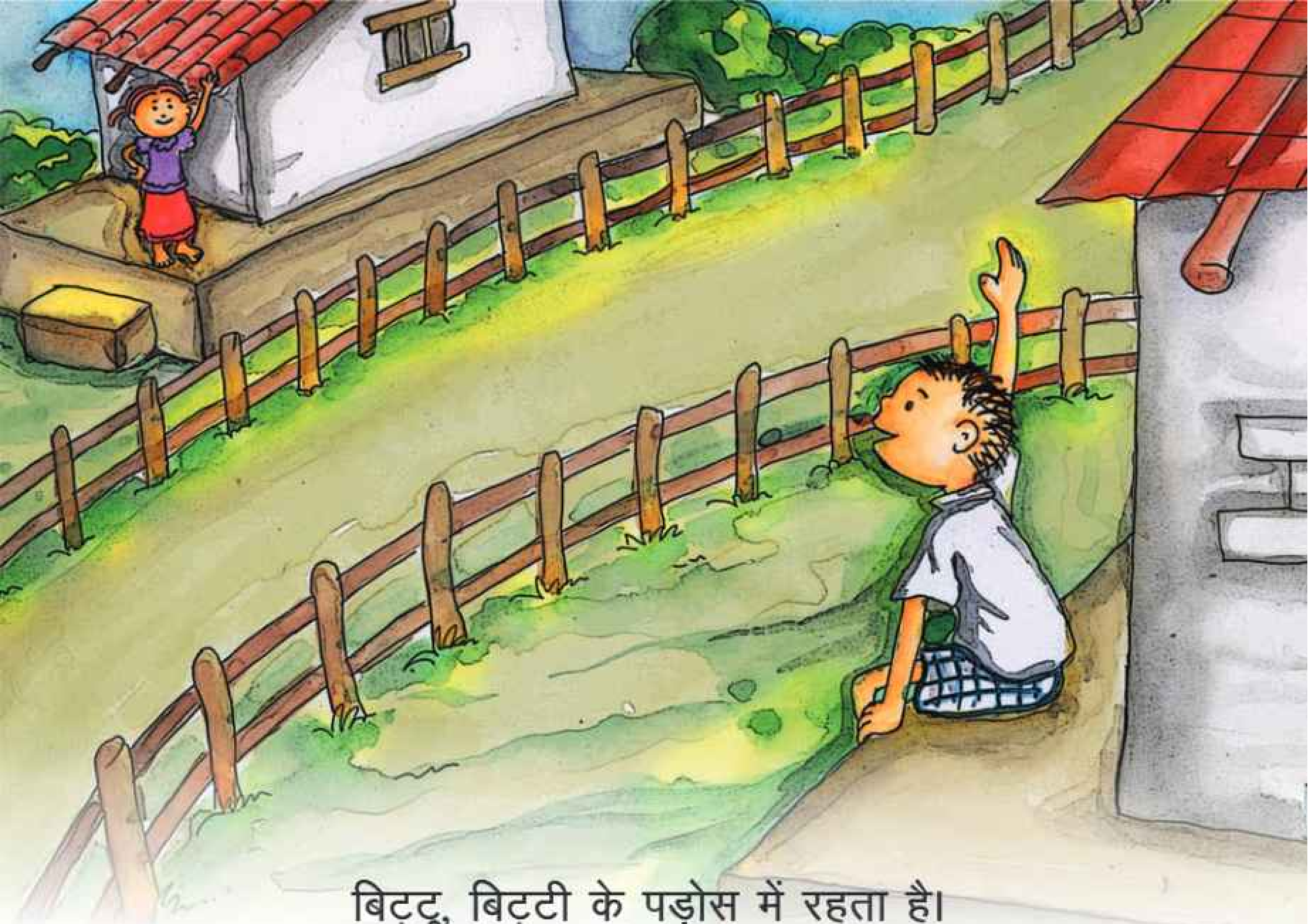

बिट्टू, बिट्टी के पड़ोस में रहता है।

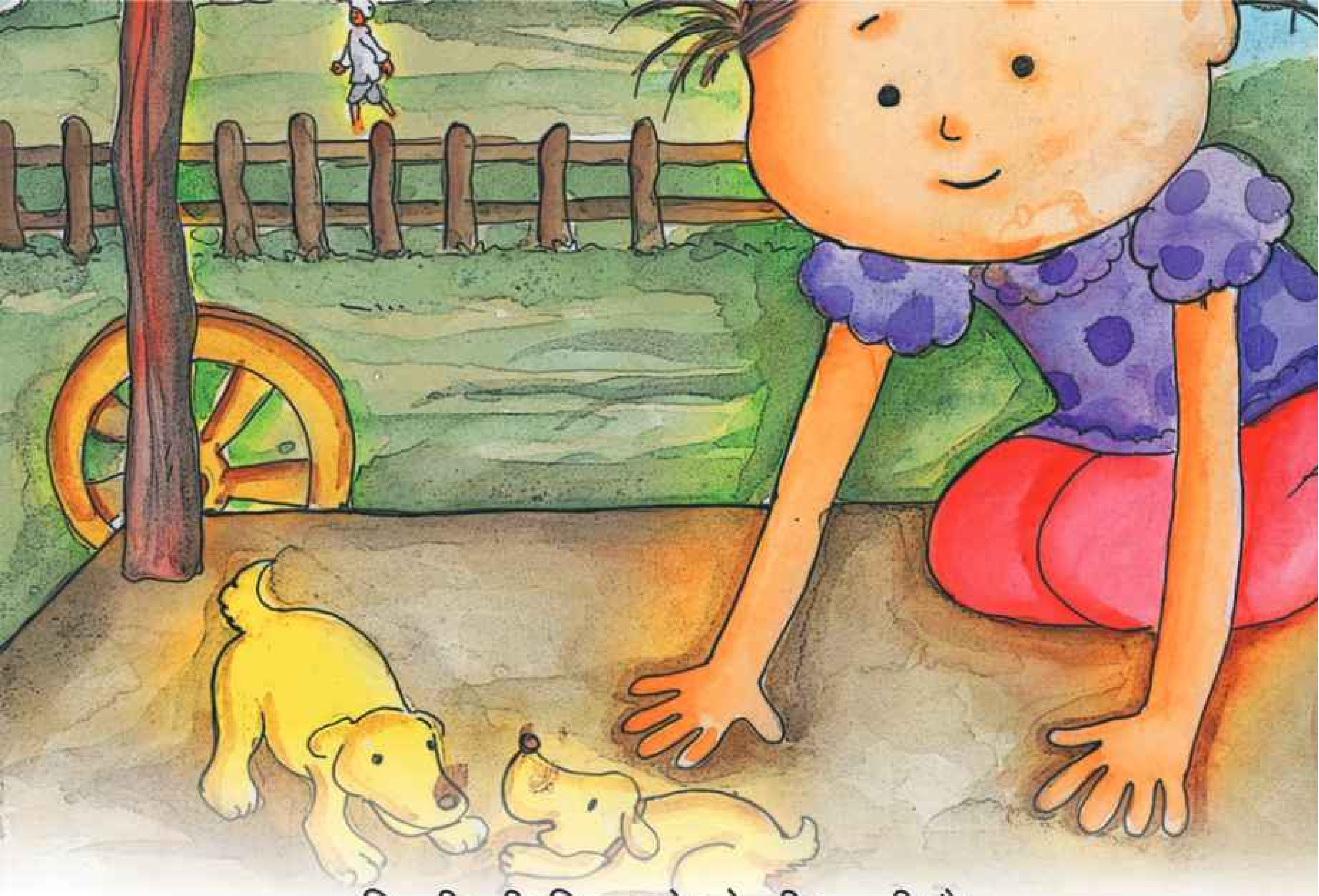

बिट्टी की बिट्टू से दोस्ती पक्की है।

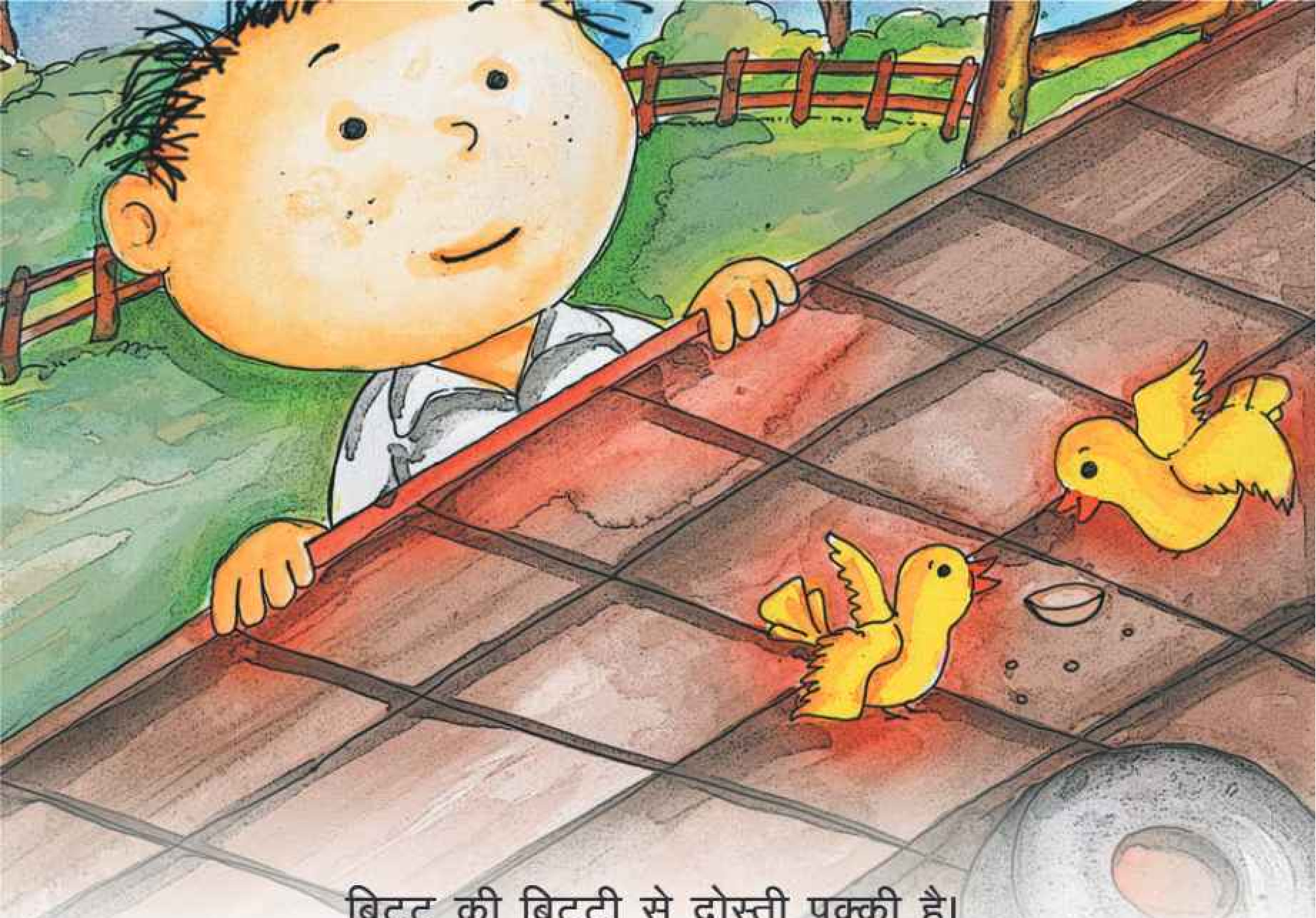

बिट्टू की बिट्टी से दोस्ती पक्की है।

एक दिन बिट्टी चली बिट्टू से मिलने।
बीच रास्ते में नटखट बिट्टी ने कागज़ की पतंग उड़ाई।

बिट्टू चला बिट्टी से मिलने।
बीच रास्ते में चंचल बिट्टू ने कागज़ की नाव तैराई।

रास्ते में बिट्टी मिली बिट्टू से...

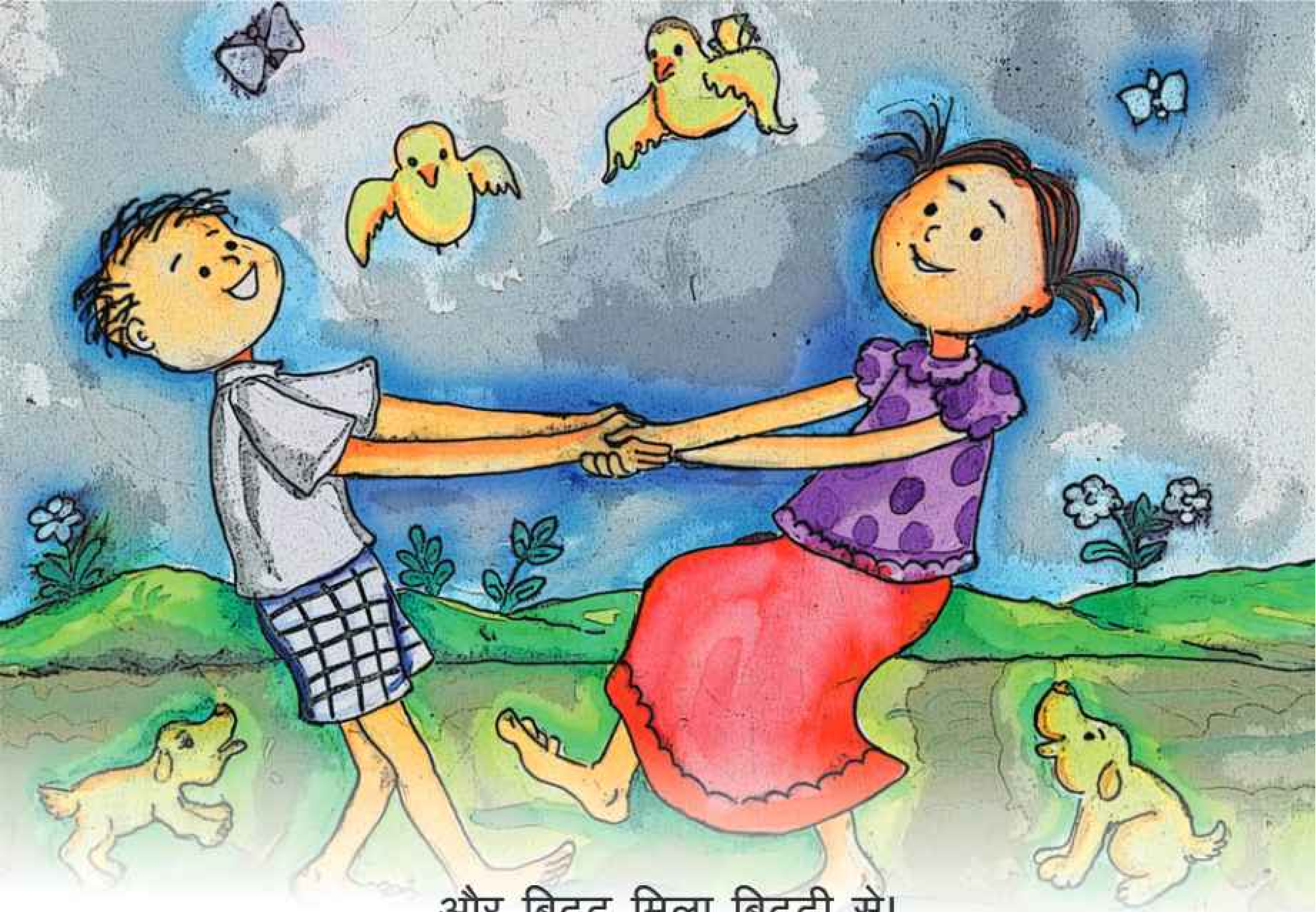

...और बिट्टू मिला बिट्टी से।

बिट्टी ने बिट्टू से कहा, “मुझे अपनी कागज़ की सजीली नाव दे दो।”

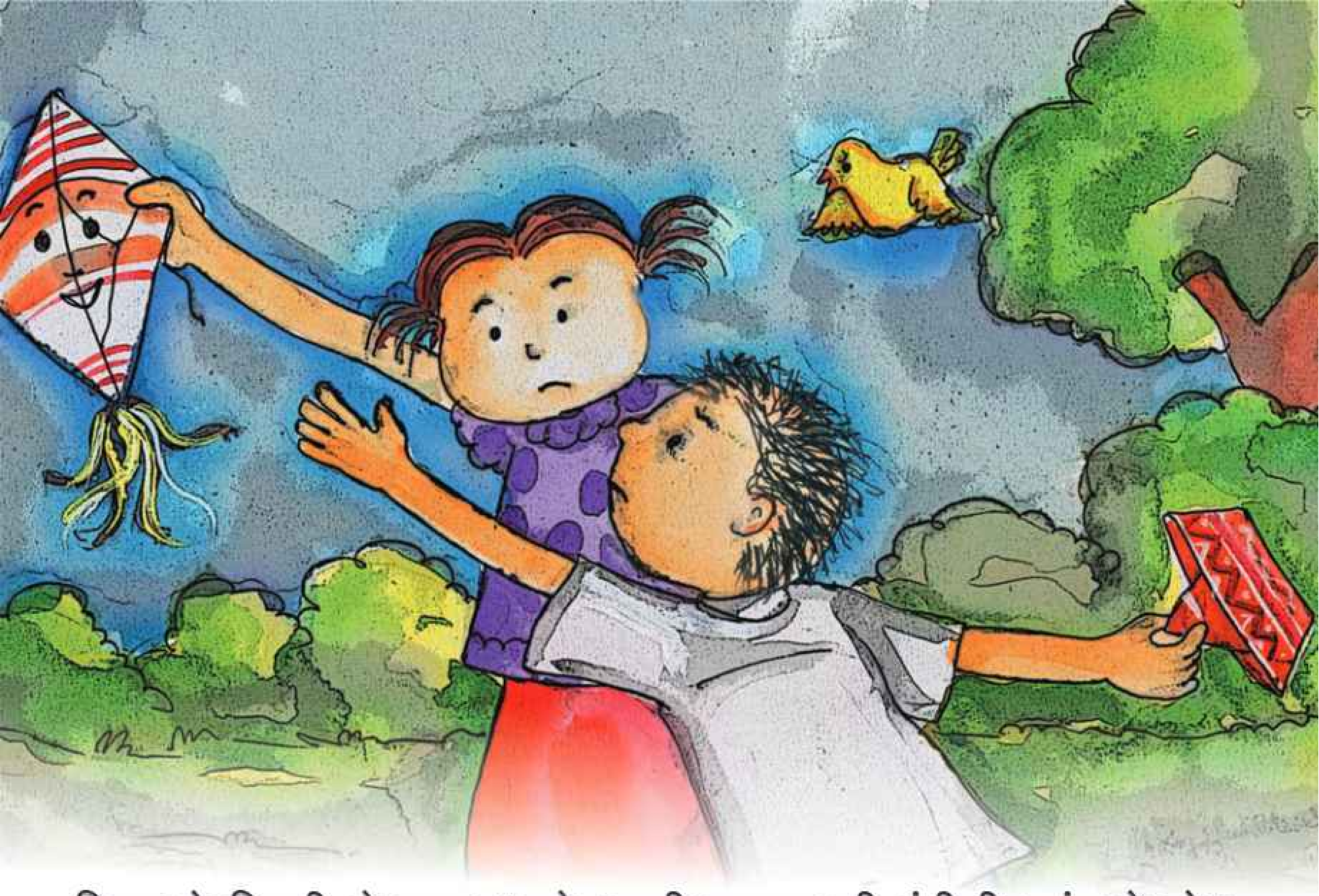

बिट्टू ने बिट्टी से कहा, “मुझे अपनी कागज़ की रंगीली पतंग दे दो।”

बिट्टी बिट्टू की सजीली नाव छीनकर तैराने भागी।

बिट्टू बिट्टी की रंगीली पतंग छुड़ाकर उड़ाने भागा।

अपनी पतंग छुड़ाने, बिट्टी ने बिट्टू का रास्ता रोका।

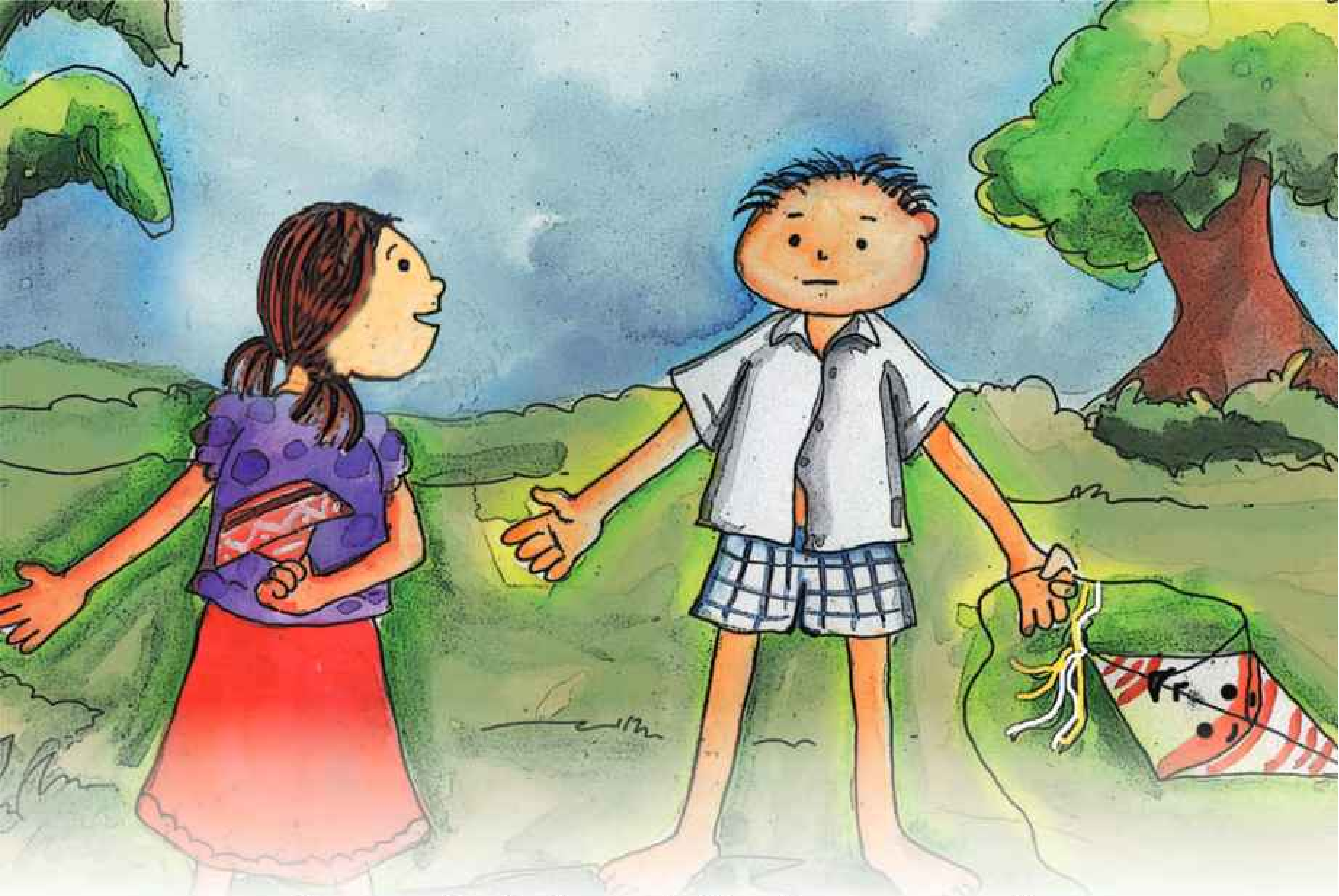

अपनी नाव छीनने बिट्टू ने बिट्टी का रास्ता रोका।

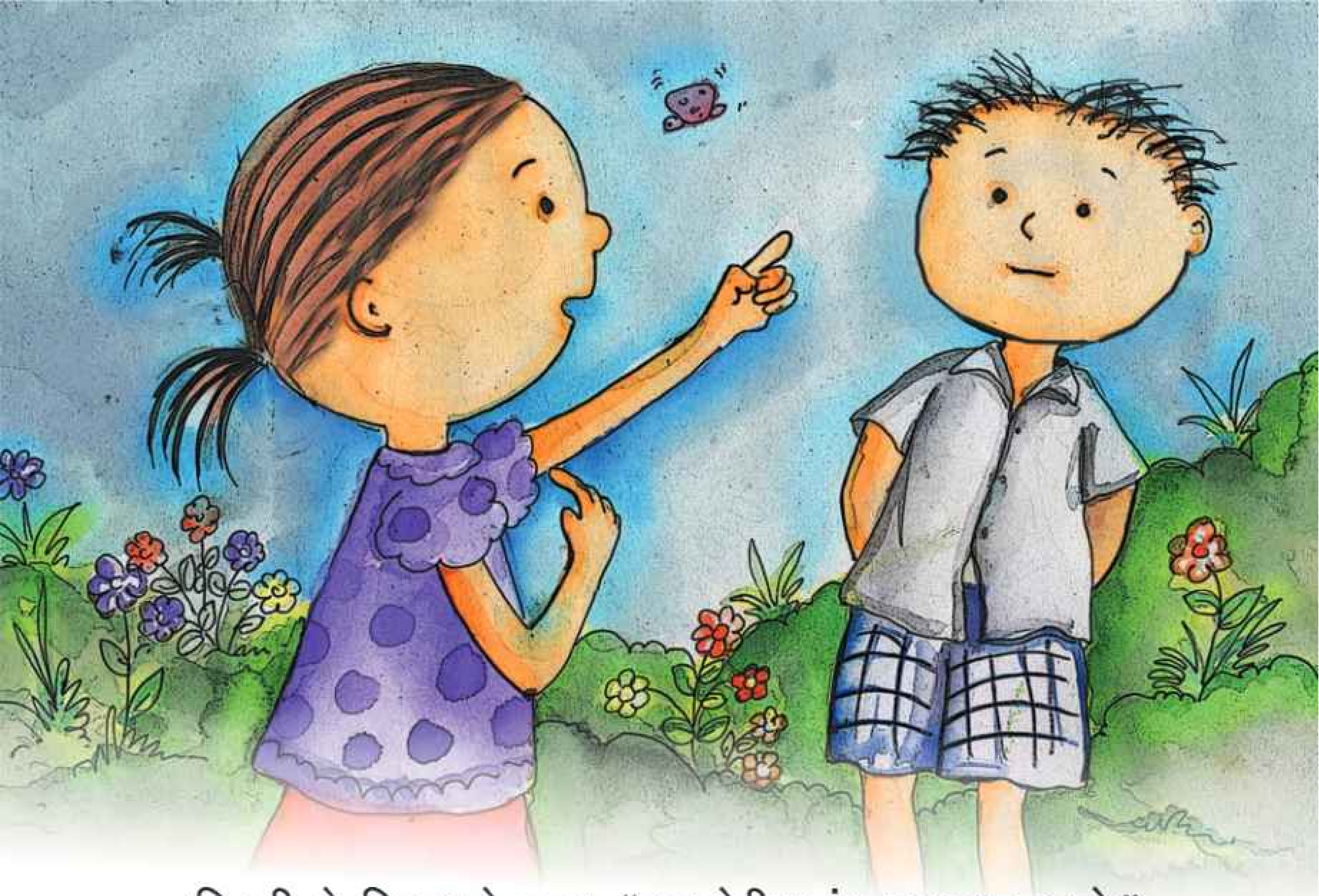

बिट्टी ने बिट्टू से कहा, “तुम मेरी पतंग वापस कर दो।”

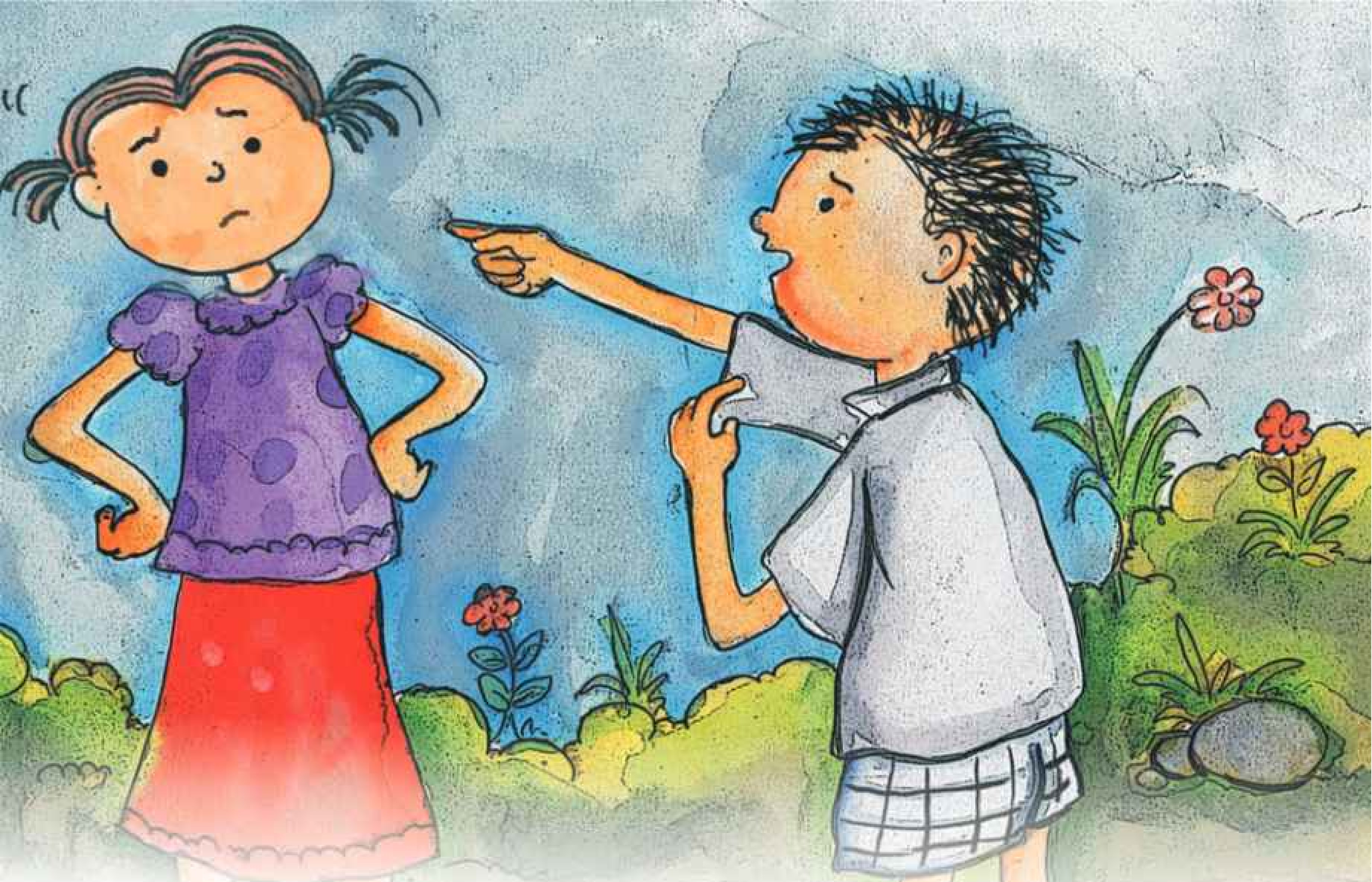

बिट्टू ने बिट्टी से कहा, "नहीं, पहले तुम मेरी नाव दो?"

अगले दिन बिट्टू मिला बिट्टी से.......... दे ताली।

और बिट्टी मिली बिट्टू से............ दे ताली।

पारुल बत्रा दुग्गल

बचपन से ही खूब पढ़ा-लिखा और चित्र बनाए। कई रचनाएँ, चित्र और फोटोग्राफ *शैक्षिक पलाश, चकमक, अनौपचारिका* व कई अन्य पत्रिकाओं में प्रकाशित। बच्चों के लिए विभिन्न विधाओं में लिखी गई नई-पुरानी श्रेष्ठ रचनाओं को खोजना और पढ़ना अच्छा लगता है। फिलहाल रूम टू रीड के पुस्तकालय कार्यक्रम के विस्तार में जुटी हैं।

शिवेन्द्र पाण्डिया

शौकिया चित्र बनाते-बनाते कब पेशेवर आर्टिस्ट बन गए पता ही नहीं चला। स्कूल के समय से ही देश की मुख्य पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित। राज्य संसाधन केन्द्र, भोपाल में आर्टिस्ट के पद पर कार्य किया। 2001 से अब तक स्वतंत्र काम करते हैं। कविता, कहानी और अन्य रचनाओं के चित्रांकन और चित्रों की भाषा के ज़रिए नए अर्थ देने के सृजनशील काम से खुशी मिलती है।

parag
AN INITIATIVE OF TATA TRUSTS
एकलव्य

मूल्य: ₹ 60.00

9 788189 976996